पाठ 13

समुदाय एवं सामुदायिक विकास

आइए सीखें

- समुदाय का क्या अर्थ है?
- सामुदायिक विकास व जनसहयोग क्या हैं?
- जनसहयोग प्राप्त करने की दिशा में नगर/ग्राम स्तर की विभिन्न समितियों की जानकारी एवं उनके कार्य क्या है?
- सामाजिक समरसता के विकास में समुदाय का क्या महत्व है।

समुदाय का अर्थ

कोई भी गांव, प्रान्त व देश अपने आप में समुदाय है। इस समुदाय में विभिन्न जाति व धर्म के लोग एक साथ रहते हैं। ये अपनी-अपनी प्रथाओं, परम्पराओं, रीति-रिवाजों के अनुसार तीज-त्यौहार आदि मनाते हैं तथा विवाह आदि संस्कार करते हैं।

कई परिवार एक-दूसरे के पास रहते हुए समुदाय की रचना करते हैं, अत: समुदाय को परिवारों का परिवार भी माना जाता है।

समुदाय एक ऐसा सामाजिक समूह हैं, जिसमें कुछ अंशों में 'हम' की भावना पाई जाती है। समुदाय का निवास स्थान व क्षेत्र निश्चित होता है।

समुदाय की विशेषताएँ

एक समुदाय की अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं, इनमें से कुछ विशेषताएँ इस प्रकार है-

- समुदाय व्यक्तियों का समूह होता है।
- कोई भी गांव, प्रान्त, देश अपने आप में समुदाय है।
- समुदाय अपना विकास स्वत: करता है।
- समुदाय में विभिन्न जाति व धर्म के लोग एक साथ रहते हैं।
- समुदाय द्वारा किया गया कोई भी कार्य स्थायी प्रकार का होता है।
- समुदाय अपने सदस्यों में अपनेपन और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देते हैं।
- समुदाय के सदस्य एक-दूसरे के सुख-दु:ख में भागीदार होते हैं।

- समुदाय एक आत्मनिर्भर समूह होता है।

सामुदायिक विकास व जनसहयोग

मनुष्य परिवारों में रहते हैं और बढ़ते हैं। जन्म से मृत्यु तक मनुष्य परिवारों में रहते हैं। कई परिवार एक-दूसरे के पास रहते हुए समुदाय बनाते हैं। समुदाय में शामिल परिवार अलग-अलग व्यवसाय करते हुए भी एकजुट रहते हैं। व्यवसाय की दृष्टि से मनुष्य क्रमश: धीरे-धीरे उन्नति कर विभिन्न अवस्थाओं अर्थात शिकारी, कंदमूल व फल संग्रहित करने, पशुपालन आदि स्थितियों से गुजर कर वह स्थाई किसान बना। उसने गांव और नगर बसाये। मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं (भोजन, आवास व वस्त्र) से आगे के विषय में सोचने लगा। मनुष्य के निवास स्थानों में प्राकृतिक विविधता के कारण उसकी जीवन शैली, व्यवसाय, रीति-रिवाज, त्यौहार, पहनने-ओढ़ने का ढंग, खान-पान की आदतों में भी परिवर्तन होता गया। स्थानीय प्रतिकूलताओं के बावजूद भी लोगों ने अपना सामुदायिक जीवन स्वत: विकसित कर लिया।

जन सहयोग

जन सहयोग से हमारा आशय, स्थानीय सामुदायिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्थानीय लोगों द्वारा सहयोग प्रदान करना है।

समुदाय के विकास के लिए स्थानीय लोगों की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है। यह ग्रामीण और शहरी समुदाय दोनों के लिए उपयुक्त है। ऐसा इसलिए आवश्यक है क्योंकि वे अपनी परिस्थितियों से परिचित हैं और स्थानीय जरूरतों को भली-भांति समझते हैं। यह उनके स्वयं के हित में है, कि वे एक साथ मिलजुलकर अपनी समस्याओं का हल निकालें। जैसे क्षेत्र में पेयजल या शिक्षा या अस्पताल जैसी मूल एवं मानवीय व्यवस्थाएँ नहीं हैं तो वे उसके लिए उचित अथवा वैकल्पिक उपाय करें। वे अपनी समस्याओं को स्वयं सुलझा सकें तथा किसी पर आश्रित न रहें। इस प्रकार लोगों में आत्मनिर्भरता की भावना का विकास होगा।

जन सहयोग द्वारा लोगों में अपनी दशा सुधारने का उत्साह पैदा होता है। जनसहयोग से राज्य व केंद्रीय सरकारों के कार्यभार को बांटने में सहायता मिलती है।

ग्राम/नगर स्तरों पर विभिन्न समितियाँ

सामुदायिक विकास में स्थानीय नागरिकों की भूमिका बहुत जरूरी है। सामुदायिक विकास के लिए जन सहयोग प्राप्त करने की दिशा में ग्राम पंचायत व नगर स्तर पर विभिन्न समितियों की स्थापना की गई है। इन समितियों के माध्यम से प्रजातंत्र में सत्ता का विकेन्द्रीकरण नीचे के स्तर (केंद्र से ग्राम/नगर) तक किया गयाहै।

ग्राम स्वराज व्यवस्था के अंतर्गत 26 जनवरी 2001 से ग्राम स्वराज की स्थापना की गई है।

ग्राम/नगर स्तर पर निम्नलिखित समितियों का गठन केंद्र अथवा राज्य सरकार से प्राप्त निर्देशों के अनुसार किया जाता है-

1. ग्राम/नगर विकास समिति
2. सार्वजनिक सम्पदा समिति
3. कृषि समिति
4. स्वास्थ्य समिति
5. ग्राम/नगर रक्षा समिति
6. अधो संरचना समिति
7. शिक्षा समिति
8. सामाजिक न्याय समिति

उपरोक्त समितियों के माध्यम से स्थानीय निवासियों में जागरूकता पैदा कर सामुदायिक विकास के लिए जन सहयोग की भावना विकसित करने के अवसर प्रदान किये गये हैं।

वर्तमान में जिन क्षेत्रों में जनसहयोग की विशेष आवश्यकता है। उन क्षेत्रों में कार्य करने वाली समितियों का परिचय इस प्रकार है-

(1) ग्राम/वार्ड शिक्षा समिति-

इस समिति का कार्य ग्राम/वार्ड में बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा व्यवस्था में अपना सहयोग देना है। यह समिति विद्यालय के प्रबंधन में भी सहयोग देती है।

(2) ग्राम/वार्ड रक्षा समिति-

यह समिति ग्राम या वार्ड में लोगों की सुरक्षा संबंधी कार्यों में सहयोग करती है। साथ ही यह समिति अपराधों की रोकथाम में पुलिस प्रशासन का सहयोग करती है।

(3) पालक-शिक्षक संघ-

वर्तमान में मध्यप्रदेश में जन शिक्षा अधिनियम के अंतर्गत प्रदेश के प्रत्येक शासकीय प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय में पालक शिक्षक संघ का गठन किया गया है। यह संघ विद्यालयों में बच्चों के शत-प्रतिशत प्रवेश, उनकी विद्यालयों में नियमित उपस्थिति, बच्चों के लिये विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन व्यवस्था, बच्चों की शैक्षिक प्रगति, विद्यालयों में शिक्षकों की समुचित व्यवस्था एवं सहायता करने हेतु कार्य करता है।

सामाजिक समरसता के विकास में समुदाय का महत्व-

आदिकाल से ही भारत देश विभिन्न धर्मों, जातियों, जनजातियों की कर्मभूमि रहा है। जाति प्रथा, ग्राम व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, संस्कार व्यवस्था हमारे भारतीय समाज का प्रमुख आधार रहे है।

सामाजिक समरसता-

समाज में व्यक्तियों का एक-दूसरे के सुख-दु:ख में समान रूप से शामिल होना, व्यवसाय, धर्म (पंथ) अलग-अलग होने के बावजूद एक-दूसरे के समारोहों में शामिल होना तथा मिल-जुलकर रहना सामाजिक समरसता के उदाहरण है।

समुदाय में किसान, बुनकर, दर्जी, बढ़ई, लोहार, दुकानदार, मजदूर आदि होते हैं। समुदाय में आजकल नर्सों, डाक्टरों, अध्यापकों, पुलिस, विद्युतकर्मियों आदि की सेवाओं की भी आवश्यकता होती है। समुदाय में प्रत्येक परिवार अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने की कोशिश करता है तथा दूसरे परिवारों की सहायता भी करता है। समुदाय इस प्रकार पारस्परिक आर्थिक निर्भरता को बढ़ावा देता है। यह परिवार के सदस्यों को सामाजिक भलाई के लिए सहयोग देता है। समुदाय अपने सदस्यों में सामाजिक समरसता और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देता है।

समुदाय में सदस्य सार्वजनिक सुविधाओं को बांटते हैं। अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वह एक-दूसरे के सुख-दु:ख में भागीदार होते हैं।

समुदाय का महत्व-

व्यक्ति या समुदाय परस्पर संपर्क में आकर एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। संपर्कों के कारण एक दूसरे के रीति-रिवाजों, विश्वासों, परम्पराओं एवं सांस्कृतिक भिन्नताओं को समझने व उनका आदर करने में मदद मिलती है।

समुदायों के निवास के क्षेत्र बदलने से जीवनयापन के तौर-तरीकों में बदलाव आ जाता है।

वर्तमान में ग्रामीण/शहरी समुदायों में परिवर्तन एवं विकास के चिन्ह दिखाई पड़ रहे हैं। जैसे ग्रामों में संचार एवं विद्युत की सुविधाएँ बढ़ना, पक्के मकान, पक्की सड़कों का विकास, यातायात सुविधाओं का विस्तार आदि। समुदाय के विकास में शिक्षा के प्रसार एवं प्रभाव ने भी असर दिखाया है। इससे समुदाय का महत्व बढ़ा है।

अभ्यास प्रश्न

1. लघु उत्तरीय प्रश्न

अ. परिवारों का परिवार किसे माना जाता है?

ब. जन सहयोग क्या है?

स. सामाजिक समरसता से आप क्या समझते हैं?

द. ग्राम एवं नगर स्तर पर गठित विभिन्न समितियों के नाम लिखिए।

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

अ. समुदाय का क्या अर्थ है? समुदाय की कोई तीन विशेषताएं बताइये।

ब. समुदाय के विकास में स्थानीय लोगों की भागीदारी का क्या महत्व है?

स. पालक शिक्षक संघ के विषय में लिखिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

अ. समुदाय ..... का समूह होता है।

ब. जन्म से मृत्यु तक मनुष्य ..... में रहते हैं।

स. ..... से राज्य व केंद्रीय सरकारों के कार्यभार को बांटने में सहायता मिलती है।

द. ग्राम स्वराज की स्थापना ..... से की गई।

य. समुदाय अपने सदस्यों में ..... और ..... की भावना को बढ़ावा देता है।

4. निम्नलिखित में से असमान छांटिए-

अ. (i) शिक्षा समिति (ii) समुदाय (iii) रक्षा समिति (iv) पालक शिक्षक संघ

ब. (i) गाँव (ii) प्रान्त (iii) वन (iv) देश

प्रोजेक्ट कार्य

- जनभागीदारी के कार्य करते हुए शहरों अथवा गांवों के लोगों के कुछ चित्र एकत्रित कीजिए।
- लोगों द्वारा किए गये किसी एक जनभागीदारी के कार्य के बारे में लिखिए।